(1)

शिक्षक : मानसिकता - प्रवृत्ति

आमतौर से यह विदित है और माना जाता है कि शिक्षक विद्यार्थियों को शिक्षा प्रदान करते हैं। शिक्षक शिक्षा (मानसिकता) से तात्पर्य - साक्षरता, व तकनीकी विज्ञान व आंकलनात्मक ज्ञान है, जिससे विद्यार्थी अपने सूझबूझ, आकांक्षा आवश्यकता व शिकायत को बता सके। उक्त शिक्षा से संबंधित समस्त गतिविधियाँ पढ़ना, लिखना, परीक्षा मे सफल होना आदि को नौकरी / व्यापार के उद्देश्य से किया जाना पाया जाता है। इसका दूसरा पक्ष जिसे कलात्मक शिक्षा कहते हैं से तात्पर्य लाभोन्माद, कामोन्माद व भोगोन्माद - ये सब भी नौकरी / व्यापार के अर्थ मे अधिक या सर्वाधिक प्रायोजित होता हुआ पाया गया - फलस्वरूप नौकरी / व्यापार की मानसिकता को सर्वश्रेष्ठ मान लिया गया।

सर्वेक्षण से यह पता चला कि उन्मादवादी कला, साक्षरता तकनीकी आंकलनात्मक ज्ञान किसी पारिवारिक संबंध में न्याय को स्थापित करने मे असमर्थ रहे या उपयोगी नहीं हुए। अर्थात वांछित रचना नहीं हुई। उक्त निष्कर्ष इस आधार पर भी संभव हुआ कि प्रत्येक व्यक्ति / शिशु काल से ही हर देश काल मे न्याय की अपेक्षा; सही कार्य व्यवहार करने की इच्छा और सत्य बोलने की सहज प्रवृत्तियों का होना पाया जाता है।

इस सहज निरीक्षण परीक्षण, सर्वेक्षण और निष्कर्ष के ओर अब तक काल से अत्याधुनिक मानसिकता व प्रवृत्ति वाले शिक्षकों का ध्यान नहीं गया - अपितु हर शिशु को जन्म काल से स्वार्थी, पापी, अज्ञानी होने के आदर्शवादी विचार धारा के अनुसार - और स्वार्थी - कामी / वंशानुषंगीयता के अन्तर्गति, भौतिक / वस्तु वादी विचार धारा के अनुसार को स्वर बुलंद करते आये। अतः मान्यताओं के प्रभाव से आदर्शवादी किताबें को उद्धृत करते हैं और भौतिक वादी ग्रंथ को

(आदर्शवादी व भौतिकवादी मान्यताओं के अतिरिक्त) वर्तमान में सर्वेक्षण के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि प्रत्येक मनुष्य संतान शिशुकाल से ही न्याय की अपेक्षा करता हुआ, सही कार्य-व्यवहार की इच्छा करता हुआ व सत्य बोलता हुआ रहता है/पाया जाता है. साथ ही यह भी स्पष्ट होता है कि शिशुकाल से ही पीछे/विगत पीढ़ी का आज्ञापालन और अनुसरण व सहयोगी प्रवृत्ति से सम्पन्न/युक्त होता है/पाया जाता है.

है। ६ दि - 81

आमतौर से यह विदित है और माना भी जाता है कि शिक्षक विद्यार्थियों को शिक्षा प्रदान करते हैं. शिक्षा वस्तु से संबंधित शिक्षक मानसिकता से तात्पर्य साक्षरता, विज्ञान (तकनीकी और आंकलनात्मक ज्ञान) व कला (लाभ-काम-भोग) ज्ञान ही है. शिक्षा के उद्देश्य संबंधी शिक्षक मानसिकता से तात्पर्य, विद्यार्थी उक्त शिक्षा से अपने स्वरूप सुख आकांक्षा आवश्यकता व शिक्षा को बता सके और नौकरी पा सके व व्यापार कर सके. फलस्वरूप शिक्षण संबंधित समस्त गतिविधियाँ पठन, लिखना, परीक्षा आदि को नौकरी/व्यापार के उद्देश्य से किया जाना पाया जाता है. कलात्मक शिक्षा भी नौकरी/व्यापार के अर्थ में अधिक/व्यावसायिक प्रयोजित होता हुआ पाया जाता है - इस तरह वर्तमान में शिक्षा संबंधी शिक्षक मानसिकता का तात्पर्य नौकरी/व्यापार की मानसिकता ही है.

शिक्षा से संबंधित शिक्षक प्रवृत्ति का तात्पर्य आदर्शवादी विचार धारा के अनुसार शिशु/विद्यार्थी जन्म से ही पापी व अज्ञानी है और भौतिकवादी विचार धारा वंशानुषंगीयता के अन्तर्गत शिशु/विद्यार्थी जन्म से ही स्वार्थी व कामी है, से है, उक्त मान्यताओं के पक्ष में आदर्शवादी कितावों को प्रमाण के रूप में उद्धृत करते हैं और भौतिकवादी यंत्रों को प्रमाण के रूप में प्रस्तुत करते हैं.

उक्त शिक्षक मानसिकता व प्रवृत्ति से अनुप्राणित भोगोन्मादी, लाभोन्मादी व कामोन्मादी साक्षरता तकनीकी व आंकलनात्मक ज्ञान किसी भी पारिवारिक संबंध में विश्वास निर्वाह के अनन्तर न्याय को उभय तृप्ति के रूप में स्थापित कराने में असमर्थ रहा, फलस्वरूप वर्तमान में जीना दुरूह होता जा रहा है, वर्तमान में भी दुरूह है, जबकि वर्तमान में सर्वेक्षण निरीक्षण व परीक्षण से निष्कर्ष निकलता है कि प्रत्येक शिशु/विद्यार्थी जन्म से ही न्याय का याचक, सही कार्य-व्यवहार का इच्छुक व सत्य वक्ता पाया जा रहा है जिसके आधार पर शिक्षक मानसिकता का स्वरूप, प्रत्येक विद्यार्थी की न्याय अपेक्षा न्याय प्रदायी क्षमता की स्थापना करने में, प्रत्येक विद्यार्थी की सही कार्य-व्यवहार की इच्छा उत्पादन कुशलता विनिमय कुशलता व सामाजिकता से और प्रत्येक विद्यार्थी के सत्य वक्ता, सत्य बोध होने से है" निश्चित व स्थिर होता है.

इसी तरह वर्तमान में निरीक्षण परीक्षण व सर्वेक्षण यह स्पष्ट होता है कि प्रत्येक शिशु/विद्यार्थी जन्म से ही पिछली पीढ़ी की आज्ञा पालन, अनुकरण व सहयोगी प्रवृत्ति का होना पाया जाता है, जिसके आधार पर शिक्षक प्रवृत्ति का स्वरूप विद्यार्थी के विश्वास करने योग्य होने के रूप में निश्चित है.

इसी तरह वर्तमान में अनुसंधान व अन्वेषण करने से यह स्पष्ट हुआ है कि शिक्षक के मानसिकता में प्रतिष्ठित शिक्षा वस्तु जीवन ज्ञान, अस्तित्व दर्शन व मानवीयता पूर्ण आचरण ही है. उक्त शिक्षा वस्तु समुच्चय के समझ के आधार पर अखण्ड समाज व सार्वभौम व्यवस्था का स्वरूप स्पष्ट रहता है. शिक्षा के उद्देश्य संबंधी शिक्षक मानसिकता से तात्पर्य, विद्यार्थी उक्त शिक्षा से व्यवहार में सामाजिक और व्यवसाय में स्वावलम्बी हो. जिसके अनन्तर पारिवारिक संबंधों की पहचान, मूल्य, मूल्यांकन व उभय तृप्ति के रूप में न्याय को स्थापित हो.

सहज मानसिकता का ...

शिक्षक का सामान्य स्वरूप से तात्पर्य, सबके लिए अनुकूल समझ मे आने वाला है। सर्वतोमुखी विचारों मे समाधानित होने वाला है

= विद्वता संपन्न भाव + समाधान संपन्न समझदारी =

शिक्षक = विद्वान = हृदयमा संपन्न मानव परिवार मानव = समाधान + समृद्धि संपन्न मानव = उपकार प्रवृत्ति मानव सहज मानव।

शिक्षा का मानसिकता = सर्वतोमुखी समाधान समाधान संपन्न विचार शैली क्यूं कैसे का उत्तर सदा समाई रहती है

शिक्षक सहज प्रवृत्ति = समाधान समृद्धि अभय सह अस्तित्व को प्रमाणित करते हुवे परिवार ग्राम परिवार शाला परीवार सक्षम आना

वस्तु (इकाईयों का यथा स्थिति सम्पन्न इकाईयां), योग (मिलन) परस्परता मे निहित प्रवृत्ति तथा समग्र वातावरण के आधार पर विकासक्रम विकास जागृतिक्रम जागृति क्रियाओं मे प्रमाण है।